टी. एफ. आर. आई. में "किसानों एवं कारीगरों की आजीविका में वृद्वि हेतु बांस हस्तशिल्प पर विशेष प्रशिक्षण"

आज दिनांक 03/02/2014 को उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में दिनांक 05 दिवसीय बॉस हस्तशिल्प प्रशिक्षण का शुभारंभ हुआ जो दिनांक 07/02/2014 को सम्पन्न होगा। यह प्रशिक्षण भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून की सतत् भूमि एवं पारिस्थितिक तंत्र प्रबंन्धन – देशों की भागीदारी [Sustainable Land and Ecosystem Management – Country Partnership Projects (SLEM – CPP)] परियोजना के अंतर्गत किसानों, ग्रामीणों एवं बांस हस्तशिल्पकारों की आजीविका में वृद्वि हेतु बांस हस्तशिल्प पर दिया जा रहा है।

स्लेम एक मल्टी स्टॉक होल्डर कार्यक्रम है जिसके अंतर्गत विश्व बैंक यूनाईटेड नेशन डव्लपमेंट प्रोग्राम एवं खा'द्य एवं कृषि संगठन की भागीदारी है। स्लेम परियोजना का प्रमुख उद्वेश्य कृषि योग्य भूमि में बिना कोई परिवर्तन किए उत्पादकता को बढ़ाना है, जिससे देश के प्राकृतिक एवं कृषि पारिस्थितिकीय तंत्र का सतत् प्रबन्धन किया जा सके। इसके अतिरिक्त स्लेम का उद्वेश्य हमारे किसान भाइयों, ग्रामीणों, बांस कारीगरों एवं वन्य कर्मियों आदि को आजीविका से जुड़े हुए विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण देना भी है, जिससे उनका आर्थिक सुधार हो सके।

उपरोक्त प्रतिवेदन एवं उसकी सामग्री संस्थान के लोक संपर्क अधिकारी श्री हरिओम सक्सेना द्वारा प्रदाय एवं तैय्यार कर वेब साईट पर अपलोड हेतु प्रदाय की गई है।

इसी तारतम्य में उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर में **किसानों एवं कारीगरों की आजीविका में सुधार हेतु बांस हस्तशिल्प पर विशेष प्रशिक्षण** दिया जा रहा है। संस्थान में इस तरह का प्रशिक्षण पूर्व में भी सम्पन्न किया जा चुका है, जिससे अनेकानेक प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए थे। चूँकि बॉस हस्तशिल्प प्रशिक्षण किसानों के लिए कृषि के अलावा आर्थिक लाभ आय का एक उचित साधन बनता जा रहा है, अतः उनके हित को देखते हुए संस्थान में इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम समय समय पर आयोजित किये जाते हैं जिससे किसानों एवं बांस के कारीगरों की कार्यकुशलता को बढ़ावा मिल सके।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के माननीय निदेशक डॉ. यू. प्रकाशम ने दीप प्रज्वलित कर किया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने अपने उद्बोधन में प्रशिक्षणार्थियों को बॉस की उपयोगिता एवं इससे नियमित आय कैसे की जाये, इस पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि बांस का महत्व मनुष्य के जीवन में जन्म से लेकर अंत तक होता है। बॉस में आजीविका की अपार सम्भावनाएँ हैं एवं बॉस किसी भी प्रकार की मिट्टी में पहाड़ों से लेकर मैदानी भागों तक उगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि बॉस जब जंगल में होता है तो पर्यावरण के हित में कार्य करता है तथा कटने के बाद आर्थिक आय का साधन बनता है, परन्तु आज हमारे वनों में बांस की लगातार कमी होती जा रही है। बांस के महत्व को देखते हुए राष्ट्रीय बॉस मिशन का भी गठन किया गया है जो बॉस का उत्पादन क्षेत्र, प्रशिक्षण द्वारा बॉस से बनी सामग्री की गुणवत्ता और बॉस का बाजार मूल्य बढ़ाने के लिये संकल्पित है। स्लेम के परियोजना के नोडल अधिकारी डॉ0 पी.के. खत्री ने भी प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा एवं बांस के महत्व पर प्रकाश डाला।

उपरोक्त प्रतिवेदन एवं उसकी सामग्री संस्थान के लोक संपर्क अधिकारी श्री हरिओम सक्सेना द्वारा प्रदाय एवं तैय्यार कर वेब साईट पर अपलोड हेतु प्रदाय की गई है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान बांस बरेली (उ.प्र.) से पधारे प्रशिक्षक श्री मुख्तार अंसारी एवं श्री मोहम्मद नदीम के कुशल मार्गदर्शन में प्रशिक्षणार्थियों को बॉस से फर्नीचर, सजावटी सामान, घरेलू उपयोग का सामान आदि बनाना सिखाया जायेगा। श्री मुख्तार अंसारी एवं श्री नदीम द्वारा विशेष तौर पर उन औजारों के उपयोग पर प्रकाश डाला जाएगा जिनके उपयोग से सामान की सुन्दरता (फिनिशिंग) एवं बाजार मूल्य बढ़ता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में आधुनिक हथियारों से बॉस की सुन्दर, टिकाऊ एवं गुणवत्ता सामग्री तैयार करना, तैयार सामग्री की पैकिंग आदि का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ0 एस0एन0 मिश्रा एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. नितिन कुलकर्णी, प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग द्वारा किया गया।

उपरोक्त प्रतिवेदन एवं उसकी सामग्री संस्थान के लोक संपर्क अधिकारी श्री हरिओम सक्सेना द्वारा प्रदाय एवं तैय्यार कर वेब साईट पर अपलोड हेतु प्रदाय की गई है।